

Chapter 16

Question: A gentleman asks how far do you agree with Shankara who says, 'Eliminate the mind completely'?

Krishnamurti: Not having read Shankara, I cannot answer. But I think it is very important to find out for ourselves and not repeat Shankara or Buddha. The difficulty with most of us is that we have read, we know what other people have said, but we do not know at all what we ourselves think. Truth is not something given to you through a book, through a teacher; you must find it out for yourself. Truth is not the ultimate truth but the simple truth of living, the truth of how to solve any problem—which cannot be solved by merely having a revolution on that level.

So, it is very important to find out for ourselves how to think. You cannot think if your mind is burdened with authority, with other beliefs. The truth of the Buddha or of the Christ or of Shankara is not your truth. Truth does not belong to any of us. It must be found. It can only be found when I understand the total process of my mind. For the mind is the result of time, and so long as I am thinking in terms of time, I cannot find truth. So, if you compare what I say with what Shankara or Buddha has said, you will never find the truth of the matter. But you will find the truth of the matter if you can pursue your own mind in operation; that alone is the liberating factor—not an economic or social revolution.

प्रश्न : एक महानुभाव पूछते हैं--शंकर के इस कथन से आप कितना सहमत हैं कि मन को पूर्ण रूप से मिटा दिया जाना चाहिए?

कृष्णमूर्ति : चूंकि मैंने शंकर को नहीं पढ़ा है इसलिए इस प्रश्न का उत्तर देना मेरे लिए संभव नहीं है। परंतु मैं यह सोचता हूँ कि हमारे लिए महत्त्वपूर्ण यह होगा कि हम शंकर अथवा बुद्ध के वचनों को दोहराने के बदले स्वयं ही इस बारे में पता लगाएं। हममें से अधिकतर लोगों की कठिनाई यह है कि हम बहुत सी बातें पढ़ लेते हैं, हमें यह पता होता है कि किसने क्या कहा, पर हम यह नहीं जानते कि हम क्या सोचते हैं। सत्य कुछ ऐसा नहीं है जिसे आप किसी पुस्तक या किसी शिक्षक के माध्यम से पा सकें, इसे तो आपको स्वयं ही खोजना होगा। सत्य कोई परम सत्य नहीं है बल्कि रोजमर्रा के जीवन की सीधी-सादी सच्चाई है, कोई भी समस्या कैसे हल हो सकती है, इसकी समझ से जुड़ा है सत्य, और किसी समस्या का हल केवल उसी स्तर पर होनेवाली क्रांति के द्वारा कभी नहीं पाया जा सकता।

इसलिए यह पता लगाया जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि हम विचार कैसे करें। यदि आपका मन किसी सत्ता या प्रामाण्य के तले, या अन्य विश्वासों के बोझ तले दबा हुआ है तो आप विचार नहीं कर सकेंगे। बुद्ध, ईसा या शंकर का सत्य, आपका सत्य नहीं हो सकता। सत्य हममें से किसी का नहीं है। इसे तो खोजना होता है। इसे केवल तभी पाया जा सकता है जब मैं अपने मन की पूरी प्रक्रिया को समझने लूँ। क्योंकि मन समय का परिणाम है, और जब तक मैं समय के ढांचे में रहकर विचार करता हूँ तब तक मुझे सत्य नहीं मिल सकता। इसलिए यदि आप मेरे वक्तव्यों से शंकर अथवा बुद्ध के वक्तव्यों की तुलना करते हैं, तो आप वास्तविकता का कभी पता न लगा पाएंगे। लेकिन यदि आप अपने मन को कार्य करते समय ध्यान से देखेंगे तो उसकी वास्तविकता को जान लेंगे। इस प्रकार ध्यानपूर्वक देखना ही एकमात्र मुक्तिदायक तत्व है, आर्थिक या किसी अन्य प्रकार की क्रांति इसमें आपकी सहायता नहीं कर सकेगी।

Chapter 16

Question: Is there such a thing as an absolute truth, timeless, measureless, and permanent?

Krishnamurti: Is not truth something that is to be found from moment to moment—not a thing which is continuous, absolute, permanent? Those very words absolute, permanent, continuous imply time, and that which is of time cannot be true. That which is true is only from moment to moment, and it cannot be continuous. What is continuous is memory, and memory can project anything, any kind of illusion. But to find what is true, mind must be free from the process of time, from memory, from the experiencer and the experienced. To find out what is truth, the mind must be from moment to moment, without continuity.

Question: You have said that truth is beyond knowledge. Is the knowledge of an unconditioned mind truth or falsehood?

Krishnamurti: I do not understand the question. One of our difficulties is that we want to go into abstractions immediately. We want to know what truth is, we want to know what God is, but we do not know how to live without acquisitiveness. Instead of understanding that, we want to discuss what truth is, but a man who is acquisitive can never find out what truth is. But if I can begin to understand the whole process of acquisition, the demand for the 'more', then perhaps, I shall understand what reality is.

Question: 'To think for oneself is to

प्रश्न : क्या किसी ऐसी वस्तु का अस्तित्व है जो परम सत्य हो, काल से परे हो, अपरिमेय और नित्य हो?

कृष्णमूर्ति : क्या सत्य कुछ ऐसा नहीं है जिसे क्षण-प्रतिक्षण खोजा जाए? क्या उसे ऐसी हस्ती के रूप में, जो सतत, परम स्वतंत्र और नित्य हो, पाया जा सकता है? सतत, परम-स्वतंत्र और नित्य आदि सारे शब्द काल पर निर्भरता दर्शाते हैं और जिसका अस्तित्व काल पर निर्भर है वह सत्य नहीं हो सकता। सत्य केवल क्षण-प्रतिक्षण होता है और वह सतत नहीं हो सकता। यदि कोई सतत है भी तो वह है स्मृति, और स्मृति किसी भी तरह का प्रक्षेपण कर सकती है, स्मृति हर प्रकार का भ्रम उत्पन्न कर सकती है। परंतु जो सत्य है उसे खोज पाने के लिए मन का काल की प्रक्रिया से मुक्त होना जरूरी है, मन को स्मृति से, अनुभवकर्ता तथा जिसे अनुभव किया जाता है उस विषय से मुक्त होना आवश्यक है। सत्य क्या है इसे जानने के लिए मन को बिना निरंतरता के क्षण-प्रतिक्षण मुक्त होते रहना आवश्यक है।

प्रश्न : आप कहते हैं कि सत्य ज्ञान के परे है। संस्कारमुक्त मन का ज्ञान सत्य होता है या मिथ्या होता है?

कृष्णमूर्ति : मैं प्रश्न को नहीं समझ पा रहा हूँ। हमारी मुश्किल यह है कि हम किसी भी बारे में तत्काल ही कोई सिद्धांत बनाने लगते हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है, हम यह जानना चाहते हैं कि ईश्वर क्या है, पर हम यह नहीं जानते कि लोभ की प्रवृत्ति से मुक्त रहकर कैसे जिया जाता है। इसे समझने के बजाय, हम, सत्य क्या है, इस बारे में चर्चा करना चाहते हैं, परंतु लोभ की प्रवृत्ति से ग्रस्त मनुष्य यह कभी नहीं जान सकेगा कि सत्य क्या है। परंतु यदि मैं लोभ की संपूर्ण प्रक्रिया को, 'और अधिक' की लालसा को समझने लगता हूँ तो शायद मैं यह समझ पाऊं कि वास्तविकता क्या है।

प्रश्न : 'केवल अपनी चिंता करते रहने का

Chapter 16

think like others.' Is that so?

Krishnamurti: Is that not life? Is our thinking now so very different from others? To think for oneself is to think like anybody else because we are all patterned after one type or another of belief or disbelief, so we do not think individually, creatively; we all think alike. You think like a Communist, if you are a Communist; if you are a Hindu; you think like a Hindu. To think freely, you have to be aware of thinking alike, to understand all the implications of thinking alike, why you think alike, why you are conditioned. Obviously, to think freely, completely, revolutionarily, means great danger, does it not? You may lose your job.

To think freely is to be unconditioned. But we are all conditioned in our own peculiar limited ways. So, if I know I am conditioned as a Hindu; and if I free myself from that conditioning, then only is it possible for me to be entirely revolutionary, to be not like 'this' or like 'that.' But first I must know that I am conditioned, which very few of us are willing to admit. To know one is conditioned, and to set about freeing the mind from that conditioning, requires a great deal of insight, persistence, constant watchfulness—a watchfulness in which there is no judgment, no comparison. Then you will find the mind becomes very quiet, very still. Then only is it possible for the mind to know what truth is, what freedom is.

मतलब है अन्य लोगों की तरह से सोचना। ऐसा है क्या?

कृष्णमूर्ति : क्या जीवन ऐसा ही नहीं है? क्या इस समय हमारे सोचने का तरीका औरों से कुछ भिन्न है? केवल अपनी चिंता करते रहना औरों की तरह से सोचना है। हम सभी किसी-न-किसी विशेष ढंग के विश्वास या अविश्वास आदि से जकड़े हुए हैं इसलिए हम स्वतंत्र रूप से विचार नहीं करते, हम रचनात्मक ढंग से नहीं सोचते, इस तरह हम सभी एक जैसे ढंग से सोचा करते हैं। यदि आप कम्युनिस्ट हैं तो एक कम्युनिस्ट के नज़रिए से विचार करते हैं, और यदि आप हिंदू हैं तो हिंदू की तरह से विचार करते हैं। मुक्त चिंतन के लिए आपको इस तथ्य के प्रति सजग होना होगा कि आप भी औरों की तरह ही सोचते हैं; फिर आपको यह समझना होगा कि आप किसी और की तरह क्यों सोचते हैं, आप संस्कारग्रस्त क्यों हैं, और औरों की तरह चिंतन करने से जुड़ी तमाम बातों को, कारणों और परिणामों को समझना होगा। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्वतंत्र रूप से, समग्र रूप से क्रांतिकारी ढंग से सोचने का अर्थ है बहुत बड़े खतरे का सामना करना, है न? हो सकता है इस कारण आपको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़े।

स्वतंत्र रूप से विचार करने का मतलब है संस्कारबद्धता से मुक्त हो जाना। परंतु हम सभी अपने-अपने खास तरीकों से, सीमित ढंग से संस्कारित हो जाया करते हैं। अतः जब मैं यह जान लेता हूँ कि मुझे एक हिंदू की तरह से संस्कारबद्ध कर दिया गया है, और यदि मैं अपने आपको उस प्रकार की संस्कारबद्धता से मुक्त कर लेता हूँ तो केवल तभी मेरे लिए पूर्ण रूप से क्रांतिकारी हो पाना संभव होता है—न कि 'इस' या 'उस' की तरह होना। परंतु पहले तो मुझे यह समझना होगा कि मैं संस्कारबद्ध हूँ, पर इने-गिने लोग ही यह स्वीकार कर पाते हैं। मैं संस्कारबद्ध हूँ यह जान पाने के लिए और संस्कारबद्धता से मन को मुक्त करने की चेष्टा करने हेतु अत्यंत पैनी अंतर्दृष्टि, अनवरत प्रयत्न और सतत जागरूक रहने की ज़रूरत होती है—एक ऐसी जागरूकता ज़रूरी होती है जिसमें न निर्णय है न तुलना। तब आप पाएंगे कि मन नितांत मौन, एकदम निश्चल हो जाता है। तभी मन जान पाएगा कि सत्य क्या है, स्वतंत्रता क्या

Chapter 16

है।

Question: Man lives in poverty and fear. The gods of such a society are bread and security. What else can earnest men offer?

Krishnamurti: To bring about a revolution in which bread and security are given to all, is that revolution? Is revolution merely at the economic level? You understand?

We see there is poverty, hunger, every kind of economic misery. Earnest men want to see the necessity for change now. At what level is this change to be brought about? On the economic level only? Or is it necessary to have a total revolution in man's thinking? If such a total revolution is possible—I say it is possible—that is the only way of solving our problems.

There can be real revolution only when you understand the total process of your being—which is, your thinking, the ways of your living—and cease to be a Hindu or a Christian. When you are a total human being, only then will the economic problem be solved, and not otherwise.

Question: What is personality? How can it be built?

Krishnamurti: You talk about personality as though it were something like building a house. The very desire to build a personality brings about self-enclosure. We are talking of something totally different from building a personality—coat, tie, trousers, and clever talk, all that.

प्रश्न : मनुष्य गरीबी और भय में जी रहा है। ऐसे मनुष्यों के समाज के लिए रोटी और सुरक्षा ही भगवान है। इसके अलावा गंभीर व्यक्ति इन्हें क्या दे सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : ऐसी क्रांति लाना जिसमें प्रत्येक मनुष्य को रोटी और सुरक्षा प्राप्त हो, क्या वास्तविक क्रांति है? क्या क्रांति केवल आर्थिक धरातल पर होती है? आप समझ रहे हैं?

हम देख रहे हैं कि गरीबी है, भूख है, चारों ओर कई तरह के आर्थिक क्लेश हैं। गंभीर सोच वाले व्यक्ति वर्तमान में बदलाव की ज़रूरत को देखना, महसूस करना चाहते हैं। यह बदलाव किस स्तर पर लाया जाना चाहिए? क्या केवल आर्थिक स्तर पर बदलाव लाना काफी है? या मनुष्य की सोच में एक संपूर्ण क्रांति लाना आवश्यक है? यदि ऐसी एक संपूर्ण क्रांति लाना संभव है—और मैं कहता हूँ कि यह अवश्य ही संभव है—तो वही समस्याओं के समाधान का एकमात्र तरीका हो सकता है।

वास्तविक क्रांति केवल तभी संभव है जब आप अपने जीने की संपूर्ण प्रक्रिया को समझने लगे, अर्थात् आप अपने सोच-विचार के, अपने जीवन जीने के तौर-तरीकों को समझने लगे और आप हिंदू या ईसाई न बने रहें। जब आप समग्र मानव होते हैं, केवल तभी आर्थिक समस्या हल हो सकेगी, यह किसी अन्य तरीके से हल न होगी।

प्रश्न : व्यक्तित्व क्या होता है? इसे निर्मित करने के लिए क्या करना होगा?

कृष्णमूर्ति : आप व्यक्तित्व के बारे में ऐसे बात कर रहे हैं मानो यह कोई भवन निर्माण का मामला हो। व्यक्तित्व निर्माण की कामना ही अपने आपको चारों ओर से बंद कर लेना है। हम यहां जिसकी चर्चा कर रहे हैं वह कोट, टाई, शर्ट-पैट, या वाक्-चातुर्य आदि से, व्यक्तित्व के निर्माण से नितान्त भिन्न चीज़ है। हम यहां स्व-सुधार के बारे में नहीं बल्कि उससे

Chapter 16

We are talking of something entirely different, not of self-improvement, but of the cessation of the self—the self as a Hindu, the self as a professor, the self as a political or religious leader, the self that says, ‘I must save the country,’ the self that says, ‘I know the voice of God.’ It is that self that must totally cease in order that the world may live.

Question: Agreeing that the mind is to be unconditioned, how is one to achieve it?

Krishnamurti: If you agree that the mind must be unconditioned, how are you to achieve an unconditional mind?

I think most of us see the importance of the mind which is not conditioned. But actually most of us feel that the mind can be made better, with a better state of conditioning. That is one of the great fallacies. The problem is not how your mind and my mind are to be unconditioned but how the conditioning of the mind takes place.

The conditioning of the mind takes place through education, does it not, through tradition, through family, through society, through religion, through belief. But behind tradition, belief, experience, there is a desire; there is a mind that is constantly acquiring, possessing, dominated by desire; it is that which conditions. Then, you will say, ‘How am I to stop desire?’ You cannot. But, if you understand the process of desire, then there is a possibility of desire coming to an end.

एकदम अलग बात कर रहे हैं, हम यहां स्व को मिटाने की, उस स्व का अंत करने की बात कर रहे हैं जो हिंदू है, जो प्रोफ़ेसर है, जो राजनीतिक या धार्मिक नेता के रूप में है, जो कहता है, ‘मुझे अपने देश की रक्षा करनी होगी’, जो कहता है, ‘मैं ईश्वरीय वाणी को जानता हूँ’। यही वह स्व है जिसका अंत हो जाना आवश्यक है ताकि संसार ठीक से जी सके।

प्रश्न : यह ठीक है कि मन को संस्कारमुक्त किया जाना आवश्यक है, पर यह होगा कैसे?

कृष्णमूर्ति : यदि आप यह मान लेते हैं कि मन का संस्कारमुक्त होना आवश्यक है तो फिर आप मन को संस्कारमुक्त बनाने के लिए क्या करेंगे?

मैं समझता हूँ कि हममें से ज़्यादातर लोग मन के संस्कारमुक्त होने के महत्त्व को देख पाते हैं। परंतु वस्तुतः हममें से अधिकांश यही महसूस करते हैं कि मन को और अधिक बेहतर बनाया जा सकता है, उसे अधिक अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं। यह एक बहुत बड़ी गलतफहमी है। समस्या आपके मन को या मेरे मन को संस्कारमुक्त करने की नहीं, बल्कि यह है कि मन संस्कारबद्ध कैसे होता है।

शिक्षा, परंपरा, परिवार, समाज, धर्म, विश्वास आदि के माध्यम से मन संस्कारबद्ध होता है, है कि नहीं? परंतु परंपरा, विश्वास, अनुभव का भी कारण मूलतः कामना ही है। मन कामना से शासित होकर निरंतर संग्रह करने में, अधिकार जमाने में लगा रहता है, यही प्रवृत्ति मन को संस्कारबद्ध कर देती है। तब आप प्रश्न करेंगे, ‘मैं इच्छा पर अंकुश कैसे लगाऊँ?’ आप इच्छा पर अंकुश नहीं लगा सकते। परंतु यदि आप इच्छा की पूरी प्रक्रिया को समझ लेते हैं तो यह संभावना बनती है कि इच्छा का अंत हो जाए।

Chapter 16

These problems are much too complex to be discussed casually. You see again what is happening. We want to deal with abstractions. We do not see the importance of living from moment to moment without authority, without fear, without the desire to find out that one is acting rightly.

To find for oneself from moment to moment the way of living—the way you treat your servants, the way you talk to your superiors, the way you think and feel—it is there that the truth lies, not somewhere behind the Himalayas. But you see, we are not interested in all that. We are interested in discussing Shankara and other deep philosophies; that is an escape. But if I know the workings of my mind, the ways of my heart, then there is a possibility of bringing about a total revolution, and it is that revolution that can bring peace and security to the world.

January 10, 1954

ये समस्याएं इतनी जटिल हैं कि इन पर हल्के-फुल्के ढंग से बातचीत नहीं की जा सकती। आप देख सकते हैं कि हो क्या रहा है। हम कोरे शाब्दिक निष्कर्षों पर आचरण करने की चेष्टा करते हैं। हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि बिना किसी प्रामाण्य को स्वीकार किए, बिना किसी भय के, बिना यह जानने की इच्छा रखते हुए कि हमारा आचरण सही है कि नहीं, क्षण-प्रतिक्षण जीना कितना महत्त्वपूर्ण है।

जीवन को हर क्षण आप कैसे जीते हैं, आप अपने नौकरों से कैसा बर्ताव करते हैं, आप अपने से ऊंचे लोगों से किस ढंग से बोलते हैं, कैसे सोचते और महसूस करते हैं—इस सब में सत्य निहित है—सत्य कहीं दूर हिमालय के उस पार नहीं है। पर आप देख सकते हैं कि इन सारी बातों में हमें कोई रुचि नहीं होती। हमारी रुचि शंकर और दूसरी गहन दार्शनिक बातों में होती है, जो कि पलायन के तरीके भर हैं। परंतु यदि मैं अपने मन की कार्यप्रणाली को जान लेता हूं, अपने हृदय के तौर-तरीकों को समझ लेता हूं तो एक समग्र क्रांति हो पाने की संभावना होती है, और ऐसी क्रांति ही संसार में शांति और सुरक्षा स्थापित कर सकती है।

१० जनवरी १९५४